DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR
B.A Part-II (HON'S) Paper-IV

By- DR. Alka Yadav
(Assistant Prof.)
G.P.H.T
Date- 29-07-20

(Comparative Government and Politics)

Lecture No- 27

मार्क्सवादी- लेनिनवादी उपागम
(Marxist Leninist Framework)

पाश्चात्य देशों के राजनीतिक वैज्ञानिकों ने तुलनात्मक राजनीतिक अध्ययनों में नये- नये प्रत्ययों का प्रयोग करके राजनीतिक व्यवहार को समझने का प्रयत्न किया। किन्तु इनमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण से राजनीतिक उथल-पुथल को समझाने का कोई क्रमबद्ध प्रयास नहीं किया गया। साम्यवाद के विस्तार व प्रसार से राजनीतिशास्त्रियों ने मार्क्सवादी लेनिनवादी परिप्रेक्ष्य के द्वारा राजनीति सामान्यीकरण करने की सम्भावनाओं की तरफ ध्यान देना शुरू किया। सबसे पहले स्टेफेन क्लार्कसन ने इस बात पर ध्यान दिया कि सोवियत संघ का 'विकास सिद्धान्त' अर्थात मार्क्सवादी-लेनिनवादी परिप्रेक्ष्य तुलनात्मक विश्लेषण का वैकल्पिक ढांचा बन सकता है।-

मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपागम के समर्थक राज्य की औपचारिक संरचनाओं को बहुत कम महत्व देते हैं। विकासशील राज्यों की समस्याएं मार्क्सवादी-लेनिनवादी उपागम के आधार पर ही समझी जा सकती हैं क्योंकि इनकी राज्य शक्ति, वर्ग तथा उद्योगों की धारणा विकासशील राज्यों में इनसे सम्बन्धित धारणाओं से बहुत मेल खाती है। जैसे लोकतंत्र का अर्थ विकासशील राज्यों व मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा वाले राज्यों में अधिक समानता रखता है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण में अन्तःशास्त्रीय अध्ययन दृष्टिकोण निहित है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी यह मानते हैं कि सामाजिक जीवन में शक्ति के आर्थिक पहलू की सर्वोपरिता ही महत्वपूर्ण होती है। आर्थिक पहलू की सर्वोपरिता का तर्कसंगत परिणाम आर्थिक शक्तियुक्त वर्ग का प्रभुत्व की व्यवस्था में होना है। यह राजनीतिक शक्ति की गौणता का सूचक है। आर्थिक शक्ति की सर्वोपरिता तथा समाज में इससे सम्पन्न वर्ग का प्रभुत्व राजनीतिक शक्ति को भी इसके अधीन बना देता है। अतः तुलनात्मक विश्लेषण राजनीतिक शक्ति के →

P.T.O

Scanned with CamScanner

आधार पर करने के साथ ही साथ आर्थिक शक्ति की संरचना को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। मार्क्सवादियों के अनुसार- उत्पादन और वितरण के साधनों पर किसका स्वामित्व है, सम्पत्ति का किस प्रकार समाज में वितरण है, ये तथ्य राजनीतिक व्यवस्था की वास्तविक प्रकृति के निर्धारक होते हैं। इसलिए तुलनात्मक राज वास्तव में यथार्थवादी तभी बन सकती है जब शक्ति के आर्थिक पहलू को ध्यान में रखा जाय।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त की विशेषताएं-

(1) इस दृष्टिकोण की प्रत्ययी व्यवस्था में स्थायित्व पाया जाता है, जैसे वर्ग संघर्ष, राज्य या सरकार जैसे प्रत्ययों के अर्थ आज भी वही हैं जो पचास वर्ष पूर्व थे। प्रत्ययी स्थिरता के कारण तुलनात्मक अध्ययन विश्लेषणों को समझना सरल हो जाता है।

(2) इस उपागम में समग्रवादी पद्धति का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए देश की राजनीतिक व्यवस्था से सम्बन्धित घटनाक्रमों को समझने के लिए इतिहास, समाज की अवस्था, अर्थव्यवस्था की प्रकृति और राजनीति को समग्रतावादी विश्लेषण में समाहित कर दिया जाता है।

(3) मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवादी व्याख्या करके आर्थिक नियतिवाद और द्वन्द्वात्मक द्वन्द्ववाद का सिद्धान्त प्रतिपादित करके वर्ग संघर्ष के द्वारा समाजों की गत्यात्मकता को समझने का प्रयास किया तथा यह बताया है कि ऐतिहासिक विकास की प्रमुख प्रेरक शक्तियां विश्लेषणों से बाहर नहीं जा सकती हैं।

(4) मार्क्सवादी-लेनिनवादी आदर्श सिद्धान्त के बजाय समाज की ठोस समस्याओं को लेकर उनको समझने और उनके स्पष्टीकरण का प्रमुख ध्येय रखते हैं। उनकी मान्यता है कि तुलनात्मक राजनीति अध्ययनों का प्रमुख जोर समाज से सम्बन्धित व प्रासंगिक बातों को ही अध्ययन व तुलनाओं के लिए चुनने में होना चाहिए।

इस उपागम की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह 'विचारधारा' विशेष से सम्बद्ध है। इसमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद से कहीं अधिक बल साम्यवाद पर केन्द्रित होने की स्थिति आ जाती है। अतः तुलनात्मक राजनीतिक अध्ययन निष्पक्षता की स्थिति से हट जाते हैं।

Scanned with CamScanner